भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-18 अंक-4 | वि. स. 2079 | युगाब्द 5124 | जून-2022 | डिजिटल संस्करण

मार्गदर्शक :
- डॉ. कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेवशर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :
- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :
- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :
- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :
- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :
भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी–91, निराला नगर,
लखनऊ, उ.प्र.–226020
दूरभाष: 0522-4001837,
0522-2789406
मो: 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :
E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोकः प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक सहयोग राशि : रु 5000/-

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/-

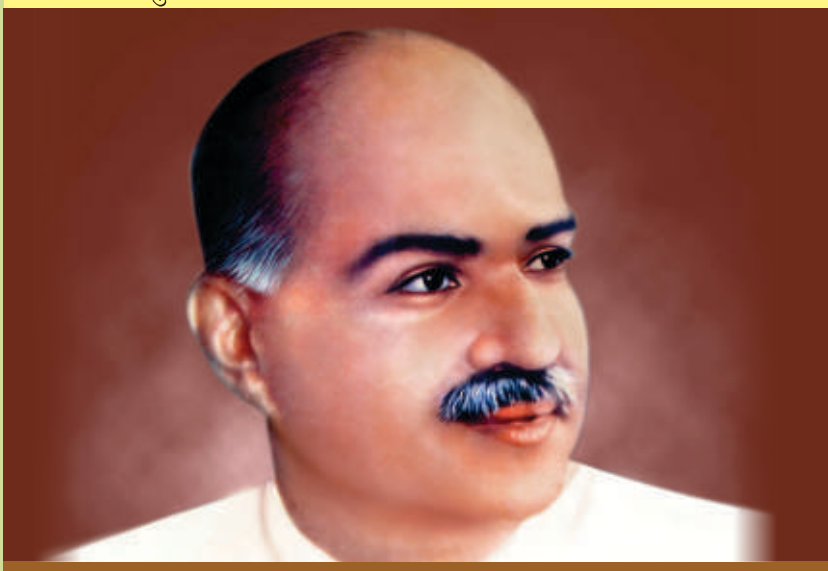

जन्म- 6 जुलाई 1901 निधन-23 जून 1953

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी

जनसंघ के संस्थापक, युगद्रष्टा निष्काम।
मानवता के उपासक, शिक्षाविद छविधाम।।
चिन्तक प्रखर विचारक, श्री प्रतिभा सम्पन्न।
हुए समर्पित राष्ट्र - हित, कभी न हुए विपन्न।।
सत्य शान्ति सिद्धान्त प्रिय, राजनीति में नाम।
ऐसे योग्य सपूत को, वन्दन नमन प्रणाम।।

- शिव

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य

आपकी पत्रिका सेवा संवाद अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है। आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें।

पाठकों की कलम से - इस कॉलम के लिए पत्रिका के विषय में या भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों से सम्बंधित आपके अनुभव व सुझाव आमंत्रित हैं। अपना नाम, पता और मोबाइल भी जरूर दें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 29 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. सचल चिकित्सा सेवा - रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. नेत्र चिकित्सा सेवा - रु. 5000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. विकलांग सहायता सेवा - रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. छात्रवृत्ति- न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक : रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.) : रु 5,000, हाईस्कूल : रु 7,000, इण्टरमीडिएट : रु 8000, आई.टी.आई/डिप्लोमा एवं स्नातक : रु 10,000, परास्नातक : रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु : रु 15,000, इंजीनियरिंग : रु 18,000 और मेडिकल : रु 20,000।
6. सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका) - रु. 2000 की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. सेवा संवाद (मासिक) - रू. 2,000 की आजीवन एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. माधव सेवा आश्रम - रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. विश्राम सदन दिल्ली - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. देवभूमि ऋषिकेश में प्रस्तावित **माधव सेवा विश्राम सदन** के भवन निर्माण हेतू अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है।
11. अक्षय सेवा - दिल्ली में एम्स एवं दो अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
12. CSR फंड - यदि आपकी फर्म CSR में भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी FCRA के अन्तर्गत दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 6806100009948 (IFSC : BKID0006806)
  - भारतीय स्टेट बैंक, डालीगंज, लखनऊ - खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - भारतीय स्टेट बैंक, सफदरजंग एंक्ल., नई दिल्ली - खाता सं. 41171580896 (IFSC : SBIN0013182)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

मानव शरीर में जन्म लेना अत्यन्त सौभाग्य की बात है। कहते हैं कि स्वर्ग में देवता भी दुर्लभ मानव शरीर प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। मानव शरीर में मानवत्व प्राप्त करने के लिए गुरुकृपा, सन्तकृपा, शास्त्र कृपा से पूर्व आत्म कृपा की आवश्यकता है। आचार्य चाणक्य का कहना है कि "यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्यकरोति किम्" अर्थात- जिस मनुष्य की बुद्धि शास्त्र से परिमार्जित नहीं है उस पर शास्त्र भी कृपा नहीं करते तथा जिसकी बुद्धि शास्त्र सम्मत परिमार्जित होती है उस पर गुरु, सन्त और शास्त्रादि सभी कृपालु हो जाते हैं। मानव में मानवत्व, जीव में जीवत्व, नर में नारायणत्व आधान करने की अपूर्व पाठशाला है- भारतवर्ष।

इस भारत की पुण्यमयी, प्रेममयी, पवित्र वसुन्धरा पर आकर ब्रह्म भी कृतकृत्यता का अनुभव करता है। यहाँ आत्मकृपा सम्भव है। आत्मकृपा अर्थात सदाचार-निष्ठा, सदाचार का प्राणपण से पालन करके मल आदि वासनाओं से अपवित्र इस तन को पावन करने का उद्योग सदाचरण से पवित्र मानव में ही मानवत्व है, अन्यथा मनुष्य चार पैरों वाला पशु न होकर दो पैरों वाला पशु ही है। लोक व्यवहार में विधि नियम समस्त शास्त्रों ग्रन्थों के उपदेश मनुष्य मात्र के लिए ही हैं अन्य जीवों के लिए नहीं। मानव में अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय - ये पांच प्रकार के कोष पूर्ण प्रभावी होते हैं। इन कोषों की यथार्थ अवस्था व्यक्ति के आहार-विहार-व्यवहार से जानी जाती है। आनन्दमय कोष के कारण ही मनुष्य हँस सकता है, अन्य जीव हँस नहीं सकते। समाज में वर्ण व्यवस्था हमारे पूर्वकर्मों का सुफल है। परमात्मा ने तो कृपा करके हमें मनुष्य बना दिया है। अब मनुष्यता का उपार्जन हमें स्वयं शास्त्रानुसार सदाचार का पालन करके करना होगा। यह मनुष्य शरीर तो साधनों का धाम है, मोक्ष का द्वार है, स्वर्ग-नरक अपवर्ग की सीढ़ी है। इसे पाकर भी हम चूक गए तो पश्चाताप होगा। प्रश्नों के माध्यम से ही धर्म-शास्त्र को, आचार-विचार को जानने के लिए विचार करते हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य के अनुसार जो ठीक से प्रश्न नहीं कर सकता वह ठीक से उत्तर नहीं दे सकता। अस्तु हमारा यह धर्म है कि हम विविध विषयों का अध्ययन-अध्यापन करते समय क्या-क्यों-कब-कैसे-कहाँ इन पांच विधेयात्मक प्रश्नों के साथ पाँच निषेधात्मक प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने की क्रिया से गहन ज्ञान प्राप्त कर समाज में भी इस कला को विकसित करें। स्वयं जिज्ञासु बनें, लोगों को जिज्ञासु बनाएं, स्वयं सदाचार का पालन करें, मनुष्यत्व की प्राप्ति का उद्योग करें। क्योंकि आचार हीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकता। "आचार हीनं न पुनन्ति वेदा:"। यद्यपि हम सब ऐसा करते ही हैं तथापि समय-समय पर महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देने की दृष्टि से श्रद्धा और प्रेमभाव से यह अंक आपको समर्पित है।

-शिव

महामना शिक्षण संस्थान

दिनांक 22 मई को श्री अष्टांनंद पाठक जी का आगमन संस्थान में हुआ। परिचय कार्यक्रम के पश्चात छात्रों को संबोधित करते हुए श्री पाठक जी ने कल्पना शक्ति के विकास हेतु अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए। डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के जीवन संघर्ष की कहानी के माध्यम से बताया कि कल्पना करना, उसकी पूर्णता हेतु दृढ़ निश्चयी होना और लक्ष्य प्राप्त होने तक सोते जागते सदैव लक्ष्य का ध्यान रखना चाहिए। दृढ़ इच्छाशक्ति से लक्ष्य की प्राप्ति सहजता पूर्वक की जा सकती है। जो बनना चाहें वह बन सकते हैं। अपनी सोच ऊंची रखें। सदैव सोचने और स्वप्न देखते रहने वालों का सहयोग प्रकृति और दैवी शक्तियां भी करती हैं। अपने आराध्य देवी-देवताओं के प्रति सदैव नतमस्तक रहें। वह पल पल आपका सहयोग करके आपको उबार लेंगे। संस्थान के सदस्य डॉ संदीप तिवारी ने अपने उद्बोधन में समय से सोने और समय से जागने के लिए प्रेरणा दी। श्री अमरेश कुमार झा भारतीय स्टेट बैंक लखनऊ, श्री रंजीव तिवारी जी सचिव महामना शिक्षण संस्थान, श्री विनय कुमार गुप्ता जी, श्री देव प्रकाश मिश्र जी और श्री अखिलेश शुक्ला जी के अतिरिक्त अन्य गणमान्य बंधु भगिनी भी उपस्थित रहे।

जिनके कुशल निर्देशन में एक्सप्रेसवे निर्मित किए जा रहे हैं ऐसे श्री वैभव जैन का आगमन संस्थान में दिनांक 26 मई को हुआ। परिचय कार्यक्रम के पश्चात छात्रों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि आपकी प्रतिस्पर्धा आपस में नहीं होनी चाहिए। इस प्रकल्प में आप सभी एक दूसरे के सहयोगी बनें। प्रतिस्पर्धा जेईई मेंस में बैठने वाले लाखों छात्रों से होनी चाहिए। हमें कुछ कर जाना है, इस प्रकार की सोच को सदैव बनाए रखें। अपनी रुचि हर क्षेत्र में बढ़ाइए और परिश्रम पूर्वक हर क्षेत्र के हर विषय को जानने का प्रयास करते रहिए।

दिनांक 29 मई को श्री अरविंद मिश्र (पारिवारिक जज) तथा श्री मनोज जी (सह प्रांत प्रचारक) का आगमन संस्थान में हुआ। श्री अरविंद मिश्रा जी ने विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया। "प्रतिदिन सोने से पहले अपने लक्ष्य का चिंतन करें। मुझे क्या और क्यों करना है - इसे प्रतिदिन प्रातः काल सोचें। सब कुछ भूल कर पूरी ताकत अपनी पढ़ाई में लगाइए। श्री मनोज जी ने छात्रों को अच्छा बनने हेतु प्रेरित किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि हमें उस पत्थर के समान बनना है जो गोमुख से चलकर घिसते घिसते हरिद्वार तक भगवान बन जाता है। उसकी लोग पूजा करने लगते हैं। आपको भी पढ़ते समय सुख की चिंता छोड़कर कष्टों को सहते हुए अपने जीवन को यशस्वी बनाना है।

दिनांक 17 अप्रैल को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल जी का आगमन संस्थान में हुआ। परिचयोपरांत डॉ.कृष्ण गोपाल जी ने छात्रों को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया। अपने सदगुण विकास, शारीरिक विकास, मानसिक विकास एवं आध्यात्मिक विकास हेतु समय से सोने और समय से जागने हेतु प्रेरित किया। प्रेरक प्रसंगों की समय-समय पर प्रस्तुति के साथ -साथ व्यायाम प्राणायाम और सूर्य नमस्कार नियमित कराये जाने हेतु प्रेरित किया। संगीत की कक्षाएं भी चलाने हेतु सुझाव दिया गया। महापुरुषों, वैज्ञानिकों, ऐतिहासिक पुरुषों और साहित्यकारों के जीवन प्रसंगों द्वारा छात्रों में आत्मविश्वास भरने की आवश्यकता पर बल दिया।

उक्त कार्यक्रम में न्यास के पदाधिकारी श्रीमान रंजीव तिवारी जी, श्री प्रमोद कुमार तिवारी जी, डॉक्टर संदीप जी, डॉक्टर विनय गुप्ता जी, डॉक्टर नरेंद्र अग्रवाल जी, डॉक्टर निखिल सिंह जी, श्री निशांत शुक्ला जी, श्री अखिलेश शुक्ला जी, श्री देवेश राय जी,श्री अशोक कुमार दुबे जीऔर श्री देव प्रकाश मिश्र आदि बंधु उपस्थित रहे।

दिनांक 05 मई को महामना शिक्षण संस्थान के परिसर में श्री हीरालाल जी, 'अतिरिक्त प्रबंध निदेशक -राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन' का आगमन हुआ। परिचय कार्यक्रम के पश्चात संस्थान के विद्यार्थियों का उत्साह वर्धन करते हुए उन्होंने कहा कि कोई कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता। व्यक्ति को अपने गुणों का उन्नयन करते रहना चाहिए। अपनी अपनी अभिरूचि (हॉबी) को विकसित करना चाहिए। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दीवानगी होनी चाहिए। दुनिया में सामाजिक परिवर्तन दिख रहा है।

महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प

प्रगति समीक्षा (मई)

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प कक्षा 11-12 में अध्ययनरत निर्धन मेधावी बालिकाओं को इंजीनियरिंग व मेडिकल जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की नि:शुल्क तैयारी करवाने के साथ साथ career की दिशा में आने वाली हर चुनौती का सामना करने में उनका मार्गदर्शन करता है। career बनाने की राह में विभिन्न साक्षात्कार भी महत्वपूर्ण पड़ाव होते हैं। हमारी छात्राएं हर पड़ाव को आसानी से पार कर सकें, इसी सोच के साथ दिनांक 29 मई को 'How to appear for an interview' विषय पर एक विशेष आनलाइन सत्र आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अतिथि वक्ता श्रीमती शिल्पी श्रीवास्तव जी, प्रधानाचार्या LIS, जोधपुर द्वारा छात्राओं का मार्गदर्शन किया गया।

इसके अतिरिक्त, व्यक्तित्व विकास की नियमित श्रृंखला में दिनांक 1 मई को 'Peer pressure' एवं दिनांक 15 मई को 'Importance of Economic Independence & Financial Literacy among Women' विषय पर PD sessions का आयोजन किया गया, जिनमें प्रकल्प में अध्ययनरत बालिकाओं ने संबंधित विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इन गतिविधियों के माध्यम से संस्थान छात्राओं को अपनी पाठ्य पुस्तकों से इतर अन्य विषयों के प्रति भी जागरूक करने को प्रयासरत रहता है।

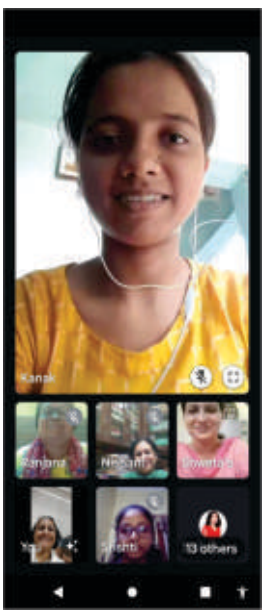

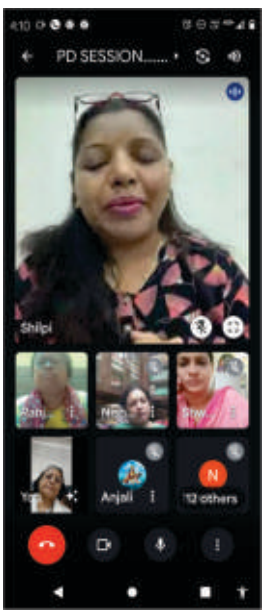

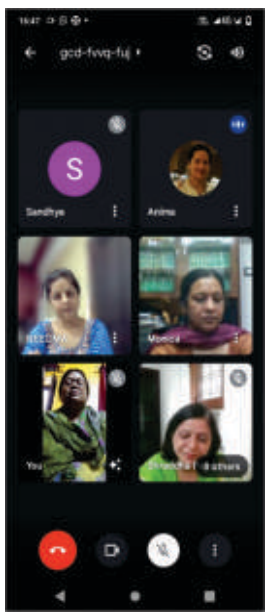

देवभूमि ऋषिकेश में माधव सेवा विश्राम सदन

यह सूचित करते हुये अत्यंत हर्ष हो रहा है कि न्यास द्वारा देवभूमि ऋषिकेश में एम्स के निकट बनने वाले माधव सेवा विश्राम सदन के भूमि पूजन की तिथि 12 एवं 13 जून की निश्चित हुई है। 12 जून को प्रातः भूमि पूजन, सायं में 'गंगा-पहाड़ और पलायन' विषय पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम, गंगा तट पर माँ गंगा की भव्य आरती और 13 जून प्रातः को शिलान्यास होगा। पूज्य स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज, श्री विजय कौशल जी महाराज, मा. भैय्या जी जोशी, डॉक्टर कृष्ण गोपाल जी, श्री पुष्कर सिंह जी धामी आदि का सानिध्य भी प्राप्त होगा।

निर्माण स्थल को समतल करने के लिए JCB द्वारा कार्य प्रारम्भ किया जाना था। यह कार्य प्रारम्भ करने से पहले इस हेतु एक सांकेतिक भूमि पूजन का कार्यक्रम गत 18 मई को प्रातः तय भूमि पर किया गया जिसमें न्यास के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल जी और प्रकल्प प्रमुख व न्यास के संस्थापक न्यासी श्री संजय गर्ग जी उपस्थित रहे। साथ ही एम्स ऋषिकेश के चिकित्सक डॉ विनोद और ऋषिकेश निवासी श्री कपिल

गुप्ता जी भी उपस्थित रहे। एक प्रमुख उपस्थिति इन्द्रदेव जी की रही जो पूजन समाप्त होते होते अपना आशीर्वाद देने के लिए काले बादलों और वर्षा के रूप उपस्थित हुए। एक अत्यंत शुभ संकेत रहा अपने प्रकल्प के लिए।

अगले मास अर्थात जून मास की 12-13 तिथि को होने वाले भूमि-पूजन व शिलान्यास के कार्यक्रम में अनेक प्रतिष्ठित संतों और समाज के प्रभावी लोगों के आने की जानकारी है। समाज के भले के लिए इस पुनीत कार्य से जुड़े इस कार्यक्रम को भव्य रूप देने, सुचारू रूप से चलाने और सफल बनाने के उद्देश्य से समाज के अनेक बन्धु अपनी इच्छा से दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। आगंतुकों के ठहरने की भी उचित व्यवस्था की जा रही है ताकि उन्हें कोई कष्ट न हो और वे कार्यक्रम का भरपूर आनंद ले सकें। हापुड़ और रूड़की के विद्यालयों के छात्र अनेक लघु नाटिकाओं आदि को प्रस्तुत करने की तैयारी कर रहे हैं। अतः आप सभी से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में आकर कार्यक्रम का आनंद लें।

आपका सहकार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूजनीय माधव राव जी गोलवलकर की स्मृति में देवभूमि ऋषिकेश में एम्स अस्पताल के निकट माधव सेवा विश्राम सदन की स्थापना प्रस्तावित है। इस सदन का उपयोग साधु संतों, एम्स ऋषिकेश में उपचार के लिए आने वाले रोगियों व उनके सहायकों द्वारा किया जाएगा। यह कार्य आपका अपना ही है, इसे अनुभव करते हुए आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप उदार हृदय से इस सेवा प्रकल्प हेतु यथा संभव सहयोग करें। आपके द्वारा दी गई राशि 80-G के अंतर्गत छूट प्राप्त है। आप CSR फंड के अंतर्गत भी सहयोग कर सकते हैं। आपका यही सहयोग निर्मित होने वाले इस विश्राम सदन के शीघ्रातिशीघ्र साकार रूप लेने में सहायक होगा।

आपके परिवार में सुख-समृद्धि के लिए शुभकामनाएं।

आर्थिक सहयोग के लिए आवश्यक जानकारी :
MCA में न्यास की CSR पंजीकरण संख्या CSR00004454
80G में न्यास की पंजीकरण संख्या AAATB1049GF20217
न्यास की FCRA पंजीकरण संख्या 136550134

भारतीय स्टेट बैंक, केंद्रीय सचिवालय, नई दिल्ली
A/C: 40692412361
IFSC : SBIN0000625

अक्षय सेवा प्रकल्प

न्यास के कोषाध्यक्ष और अक्षय सेवा प्रकल्प के संयोजक डॉ रामअवतार किला जी ने 23 मई को भोजन वितरण में भाग लिया। उनके साथ उनके पड़ोसी और समाजसेवी श्री अशोक शर्मा जी भी उपस्थित थे। श्री अशोक जी भोजन वितरण में भाग लेकर स्वयं को धन्य मान रहे थे। उन्होंने कहा कि अक्षय सेवा द्वारा चलाई जा रही फ़ूड ड्राइव ही सच्ची मानव सेवा है। श्री अशोक शर्मा जी जैसे महानुभावों का स्वयं आकर भोजन वितरण में भाग लेना न्यास और प्रकल्प के कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करता है और अनेकों को इस प्रकल्प से जुड़ने को प्रेरित भी करता है।

पिछले मास में ही न्यास के इस प्रकल्प को 5 वर्ष पूर्ण हुए हैं जिसमें प्रतिदिन लगभग 2000 लोगों को भोजन कराते हुए 43 लाख से अधिक लोगों को भोजन वितरण करने में न्यास सफल हुआ है। इस यात्रा में अनेक गणमान्य व्यक्ति न्यास के साथ जुड़े और उन्होंने भोजन वितरण का पुण्य कमाया।

न्यास का लक्ष्य इस यात्रा को पूर्व की भांति अनवरत रूप से चलाने का है और समाज के सहयोग से इस लक्ष्य को प्राप्त करने में न्यास सफल होगा यह निश्चित है।

समर्थ भारत प्रकल्प

- **मालवीय नगर केंद्र प्रशिक्षण गतिविधियाँ –** ब्यूटिशियन कोर्स – इस कोर्स में कुल 20 बहनें प्रशिक्षण ले रही हैं। सुश्री अंजली जी के द्वारा इस केंद्र में ब्यूटिशियन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह बैच 31 मार्च 2022 से प्रारंभ हुआ था और तीन माह के पश्चात 29 जून 2022 को पूर्ण होगा। मई माह जो गतिविधियाँ हुई हैं उनमे से कुछ निम्नवत हैं -
  - अल्ट्रासोनिक फेसिअल
  - केराटिन

- **प्रियंका कैंप केंद्र प्रशिक्षण गतिविधियाँ –** ब्यूटिशियन कोर्स - इस कोर्स में 20 बहनें प्रशिक्षण ले रही हैं। श्रीमती निशा गोला जी के द्वारा इस केंद्र में ब्यूटिशियन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह बैच 09 मई 2022 से प्रारंभ हुआ था और तीन माह के पश्चात 08 अगस्त 2022 को पूर्ण होगा। मई माह जो गतिविधियाँ हुई हैं उनमें से कुछ निम्नवत हैं -
  - मेहंदी क्लास
  - हेयर स्टाइल क्लास
  - आई मेकअप

- **टैंक रोड, करोलबाग केंद्र प्रशिक्षण गतिविधियाँ –** ब्यूटिशियन कोर्स - इस कोर्स में कुल 21 बहनें प्रशिक्षण ले रही हैं। श्रीमती शालिनी चौहान जी के द्वारा इस केंद्र में ब्यूटिशियन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह बैच 31 मार्च 2022 से प्रारंभ हुआ था और तीन माह के पश्चात 29 जून

2022 को पूर्ण होगा। मई माह जो गतिविधियाँ हुई हैं उनमें से कुछ निम्नवत हैं -

- मेहंदी क्लास
- हेयर स्पा
- हेयर स्मूथिंग

प्रशिक्षार्थियों के द्वारा मेकअप

- **रघुबीर नगर केंद्र प्रशिक्षण गतिविधियाँ –** ब्यूटिशियन कोर्स - इस कोर्स में कुल 22 बहनों ने प्रशिक्षण लिया। सुश्री रंजीता संधु जी के द्वारा इस केंद्र में ब्यूटिशियन का प्रशिक्षण दिया गया था। यह बैच 31 दिसम्बर 2021 से प्रारंभ हुआ था और तीन माह के पश्चात 30 मार्च 2022 को पूर्ण हो गया था। इस माह दूसरे बैच का प्रमाणपत्र वितरण समारोह हुआ है तथा इस बैच की जो गतिविधियाँ हुई हैं उनमे से कुछ निम्नवत हैं -
  - प्रशिक्षार्थियों के द्वारा मेकअप
  - द्वितीय बैच को प्रमाणपत्र वितरण (21 मई 2022)

"दिल्ली की शान" सम्मान

भारत प्रकाशन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में पिछले वर्ष न्यास द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवा कार्यों के लिए न्यास को "दिल्ली की शान" सम्मान से सम्मानित किया गया। न्यास की ओर से यह सम्मान लेने के लिए न्यास के संस्थापक न्यासी और कोषाध्यक्ष डॉ रामअवतार किला जी उपस्थित रहे। उन्हें यह सम्मान हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी द्वारा दिया गया। इस अवसर पर दिल्ली के प्रान्त कार्यवाह श्री भारतभूषण जी और पांचजन्य पत्रिका के सम्पादक श्री हितेश शंकर जी भी उपस्थित थे। दिल्ली के अशोका होटल में आयोजित इस कार्यक्रम में 8 राज्यों के मुख्यमंत्री भिन्न भिन्न समय पर उपस्थित रहे।

न्यास के सभी कार्यकर्ताओं की ओर से पांचजन्य और भारत प्रकाशन का बहुत बहुत धन्यवाद।

श्री रामअवतार किला, श्री हितेश शंकर, श्री मनोहर लाल खट्टर और श्री भारत भूषण जी

पावन स्मृति - मई

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया,अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत है ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित है- सम्पादक

दिनांक	दिवस	महापुरूष/घटना का नाम
3 जून	जन्म-तिथि	बुंदेलखंड का शेर : छत्रसाल
8 जून	बलिदान-दिवस	बन्दा बैरागी का बलिदान
13 जून	जन्म–दिवस	सुखदेव
16 जून	बलिदान-दिवस	नलिनीकान्त बागची का बलिदान
17 जून	बलिदान-दिवस	झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का अमर बलिदान
17 जून	पुण्य-तिथि	शिवाजी की गुरू : माता जीजाबाई
18 जून	इतिहास-स्मृति	हल्दीघाटी का महासमर
23 जून	बलिदान-दिवस	डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का बलिदान
24 जून	पुण्य-तिथि	ओम जय जगदीश हरे भजन के लेखक- श्रद्धाराम फिल्लौरी
25 जून	इतिहास-स्मृति	अंग्रेज सेना का समर्पण
26 जून	जन्म-तिथि	वन्देमातरम् के रचयिता : बंकिमचन्द्र चटर्जी
27 जून	पुण्य-तिथि	कर्तव्य कठोरः दादाराव परमार्थ
28 जून	जन्म-तिथि	अद्भुत दानी: भामाशाह

बन्दा बैरागी

जन्म 27 अक्तूबर, 1670 -8 जून, 1716

बंदा बैरागी का जन्म ग्राम तच्छल किला, पुंछ में श्री रामदेव के घर में हुआ। उनका बचपन का नाम लक्ष्मणदास था। युवावस्था में शिकार खेलते समय उन्होंने एक गर्भवती हिरणी पर तीर चला दिया। इससे उनका मन खिन्न हो गया और वे माधोदास बनकर और घर छोड़कर तीर्थयात्रा पर चल दिये। अनेक साधुओं से योग साधना सीखी और फिर नान्देड़ में कुटिया बनाकर रहने लगे। इसी दौरान गुरु गोविन्दसिंह जी के इस्लामिक आतंक से जूझने के आह्वान के पश्चात माधोदास का जीवन बदल गया। गुरुजी ने उसे बन्दा बहादुर नाम दिया। बन्दा हजारों सिख सैनिकों को साथ लेकर पंजाब की ओर चल दिये।उन्होंने सबसे पहले श्री गुरु तेगबहादुर जी का शीश काटने वाले जल्लाद जलालुद्दीन का सिर काटा। फिर गुरु गोविन्द सिंह जी के दोनों छोटे पुत्रों को दीवार में चिनवाने वाले सरहिन्द के नवाब वजीरखान का वध किया। जिन हिन्दू राजाओं ने मुगलों का साथ दिया था, बन्दा बहादुर ने उन्हें भी नहीं छोड़ा। इससे चारों ओर उनके नाम की धूम मच गयी। उनके पराक्रम से भयभीत मुगलों ने दस लाख फौज लेकर उन पर हमला किया और विश्वासघात से 17 दिसम्बर, 1715 को उन्हें पकड़ लिया। उन्हें लोहे के एक पिंजड़े में बन्द कर दिल्ली लाया गया। उनके साथ हजारों सिख सैनिक भी कैद किये गये थे। रास्ते भर गर्म चिमटों से बन्दा बैरागी का माँस नोचा जाता रहा। काजियों ने बन्दा और उनके साथियों को मुसलमान बनने को कहा; पर सबने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। दिल्ली में 7 मार्च, 1716 से प्रतिदिन सौ वीरों की हत्या की जाने लगी। एक दरबारी मुहम्मद अमीन ने पूछा – तुमने ऐसे बुरे काम क्यों किये, जिससे तुम्हारी यह दुर्दशा हो रही है ? बन्दा ने सीना फुलाकर सगर्व उत्तर दिया – "मैं तो प्रजा के पीड़ितों को दण्ड देने के लिए परमपिता परमेश्वर के हाथ का शस्त्र था।

क्या तुमने सुना नहीं कि जब संसार में दुष्टों की संख्या बढ़ जाती है, तो वह मेरे जैसे किसी सेवक को धरती पर भेजता है।" बन्दा से पूछा गया कि वे कैसी मौत मरना चाहते हैं। बन्दा ने उत्तर दिया - "मैं अब मौत से नहीं डरता; क्योंकि यह शरीर ही दुःख का मूल है।" भयभीत करने के लिए उनके पाँच वर्षीय पुत्र अजय सिंह के दो टुकड़े कर उसके दिल का माँस बन्दा के मुँह में ठूँस दिया। आठ जून, 1716 को उस वीर को हाथी से कुचलवा दिया गया। इस प्रकार बन्दा वीर बैरागी अपने नाम के तीनों शब्दों को सार्थक कर बलिपथ पर चल दिये।

पंडित गोपीनाथ कविराज

(जन्म 7 सितंबर 1887, निधन 12 जून 1976)

पंडित गोपीनाथ कविराज ने संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में न केवल तंत्रागम विभाग की स्थापना की, बल्कि पूरी दुनिया में तंत्रशास्त्र को पहचान दिलाई थी। वे केवल तंत्रशास्त्र के ज्ञाता ही नहीं, बल्कि वेद-वेदांग, न्याय, सांख्य-योग, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, दर्शन सहित तमाम शास्त्रों के ज्ञाता थे। उन्हें चलता-फिरता विश्वकोश माना जाता था।

देश-विदेश से तमाम विद्वान उनसे शिक्षा ग्रहण करने विश्वविद्यालय आते थे। भारतीय शास्त्र के अलावा कुरान, बाइबिल पर भी उनकी पकड़ समान रूप से थी। वह भारतीय दर्शन की एक शाखा, पूरी संस्था थे।

पं. गोपीनाथ कविराज का जन्म ढाका (बांग्लादेश) में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा जयपुर में हुई। वर्ष 1913 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एमए में सर्वाधिक अंक अर्जित किए। वर्ष 1914 में विश्वविद्यालय स्थित सरस्वती भवन पुस्तकालय में बतौर लाइब्रेरियन उनकी नियुक्ति हुई। करीब छह वर्ष वह लाइब्रेरियन रहे।

तत्कालीन प्राचार्य डॉ ए. वेनिस उन्हें काफी सम्मान देते थे। डॉ वेनिस के बाद वह वर्ष 1923 में संस्कृत कालेज के प्राचार्य बने और 14 वर्षों तक संस्था के प्राचार्य के रूप में अपनी सेवा दी। ग्रंथों के रूप में उनकी अमिट छाप विश्वविद्यालय के सरस्वती भवन में सहेज कर रखी हुई है। उन्होंने योग क्रिया पर आधारित दर्जन भर से अधिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें भारतीय संस्कृति और साधना, साधु दर्शन और सतप्रसंग प्रमुख हैं। प्रतिभाशाली शिक्षाविद, सत्य को समर्पित साधक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक का निधन वाराणसी में हुआ।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी

(6 जुलाई 1901–23 जून 1953)

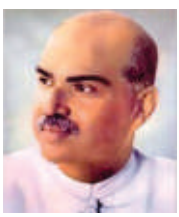

श्यामा प्रसाद मुखर्जी न सिर्फ एक शिक्षक बल्कि एक अनुभवी राजनीतिज्ञ और कुशल संगठनकर्ता भी थे। उनका जन्म एक संपन्न और प्रतिष्ठित बंगाली परिवार में हुआ था। पिता सर आशुतोष मुखर्जी बंगाल के एक जाने–माने शिक्षाविद थे। उनकी प्राथमिक शिक्षा भवानीपुर के मेत्र संस्था से हुई थी। मैट्रिक के बाद उन्होंने कोलकाता के प्रेसिडेंसी कॉलेज से इंटरमीडिएट और अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। 1922 में उनका विवाह सुधा चक्रवर्ती के साथ हुआ। 1923 में विश्वविद्यालय सीनेट के फेलो बने और 1923 में ही बांग्ला में M.A. की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की। 1924 में कोलकाता विश्वविद्यालय से बैचलर ऑफ़ लॉ की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने कोलकाता उच्च न्यायालय में अधिवक्ता के रूप में अपना नाम दर्ज कराया। उसके बाद 1926 में वे आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गए। वे 1927 में बैरिस्टर एट लॉ की डिग्री लेकर भारत लौटे। 33 वर्ष की उम्र में उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय का कुलपति बनाया गया जो कि एक इतिहास बन गया, सबसे कम उम्र की आयु में कुलपति बनने का। वे इस पद पर सन 1938 तक बने रहे। इसी के साथ उनकी प्रसिद्धि चहूँ ओर एक विचारक तथा प्रखर शिक्षाविद् के रूप में फ़ैलने लगी।जम्मू कश्मीर को भारतीय संविधान का हक दिलाने के लिए सन 1953 में उस समय की व्यवस्था के अनुसार बिना परमिट लिये जम्मू कश्मीर की ओर निकल पड़े। वहाँ पहुंचते ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और नज़रबंद करके रखा गया। 23 जून को उनकी रहस्यमय परिस्थितियों में मृत्यु हो गयी। यह रहस्य आज तक रहस्य ही बना हुआ है।

विश्राम सदनों में मई-2022 में आने वाले नए आगंतुक

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU, लखनऊ	विश्राम सदन, दिल्ली	IGIMS, पटना	एम्स, झज्जर	योग
1	जम्मू कश्मीर			15		4	**19**
2	हिमाचल प्रदेश					1	**1**
3	पंजाब	2		4		4	**10**
4	हरियाणा	2		18	2	163	**185**
5	दिल्ली	4		7	3	65	**79**
6	उत्तराखंड	4	2	7		15	**28**
7	उत्तर प्रदेश	1804	634	214	7	214	**2873**
8	बिहार	1191	33	238	1791	28	**3281**
9	झारखण्ड	84	2	28	33	4	**151**
10	सिक्किम	2		4		1	**7**
11	नागालैंड				5		**10**
12	असम					5	
13	मणिपुर /मिजोरम						
14	अरुणाचल प्रदेश						
15	त्रिपुरा			6			**6**
16	मेघालय						
17	प. बंगाल	12		17	4	2	**35**
18	ओडिशा/अंदमान	4		2	2		**8**
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना			1		1	**2**
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी	2					**2**
21	कर्नाटक						
22	केरल			1			**1**
23	महाराष्ट्र /गोवा	25	2	3		1	**31**
24	मध्य प्रदेश	78		49		20	**147**
25	छत्तीसगढ़	6		2			**8**
26	गुजरात	3		7			**10**
27	राजस्थान			26		16	**42**
28	अन्य					3	**3**
	पड़ोसी देश						
29	नेपाल	17	2	19	11	1	**50**
30	बांग्लादेश					1	**1**
31	अन्य देश						
	योग (इस मास)	**3240**	**675**	**668**	**1858**	**549**	**6990**
	योग (मई 22)	**5985**	**1570**	**1267**	**3311**	**1064**	**13197**
	एक दिन की औसत उपस्थिति	**346**	**133**	**244**	**175**	**142**	**1040**

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केंद्र	मई	अप्रैल से मई
वेदांत आश्रम पपनामऊ चिनहट	14	14
सेवा समर्पण संस्थान, बिन्दौवा	89	234
51 शक्तिपीठ, बक्शी का तालाब	0	37
अम्बेडकर नगर	40	40
माधव सेवा आश्रम	0	0
माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केंद्र		
एलोपेथिक	334	707
होम्योपैथिक	305	541
रूग्ण सेवा केंद्र, माधव सेवा आश्रम	212	422
कुल लाभान्वित रोगी	**994**	**1995**

देवड़े नेत्र चिकित्सालय

चिकित्सालय में दी गई सेवाएँ

	मई	योग (अप्रैल - मई)
नेत्र परीक्षण	660	1553
चश्मा वितरण	413	847
मोतियाबिंद ऑपरेशन	7	70
Fundus Test	0	48
OCT Test	0	6
पैथोलॉजी	235	258

आलोक : नेत्र एवं पैथोलॉजी जांच केवल 20 रूपए के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है।

आप भी लिखें :- सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख (चित्र सहित), सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं सुझाव आदि सामग्री तथा सेवा संवाद के प्रकाशित अंकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर हमारा मार्गदर्शन, सहयोग करने का कष्ट करें- सम्पादक।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	सम्पर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ.पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती सीमा अग्रवाल	9335922353
सामाजिक विज्ञान एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन, के.जी.एम.यू., लखनऊ	श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल	9415003111
देवड़े नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
सेवा संवाद (मासिक), लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक), लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
विश्राम सदन, एम्स, दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	श्री गौरव गर्ग	9918532007
विश्राम सदन, आई.जी.आई.एम.एस., पटना	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457
विश्राम सदन, एम्स, झज्जर (हरियाणा)	श्री विकास कपूर	9818098600
माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश	श्री संजय गर्ग	9837042952

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस सेवा न्यास सी-91, निराला नगर, लखनऊ-226020 के लिए नूतन ऑफसेट मुद्रण केंद्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226002 से मुद्रित, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-91, निराला नगर, लखनऊ-262020 से प्रकाशित - सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी